Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

रामचरितमानस मानस में प्राकृतिक पर्यावरण चेतना

Suman Lata*

Associate Professor, Hindi Department, D.A.V. College, Pahowa

----------X----------

फादर कामिल बुल्के के अनुसार "पर्यावरण का अर्थ Environs घेरना, Ment वातावरण अर्थात अड़ोस-पड़ोस परिसर।"[1]

"पर्यावरण शब्द का अर्थ होता है- 'हमारे चारों ओर का आवरण'। अतः हमें जो चारों ओर से घेरे हुए है वही पर्यावरण है। हमारे जीवन की प्रत्येक घटना पर्यावरण से सम्पादित होती है। मानव भी अपनी क्रियाओं द्वारा पर्यावरण को प्रभावित करता हैं। अतः पर्यावरण की संकल्पना अति व्यापक है। पर्यावरण के अन्तर्गत प्राकृतिक, भौतिक, जैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण सम्मिलित हैं।

जहां तक 'चेतना' का प्रश्न है- 'चेतना' का विकास मानव मस्तिष्क से होता है। चूंकि मानव के विकास में व्यक्ति व परिवार की भूमिका के साथ समाज की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः चेतना उसे व्यक्तिगत विषय में तथा सामाजिक वातावरण के विषय में भी ज्ञान कराती है। यही ज्ञान व विचार शक्ति बुद्धि है। बुद्धि तक पहुँचने वाला आवेग, संवेग ही चेतना को जन्म देता है और इस चेतना से उत्पन्न प्रेरणा के कारण ही मनुष्य कोई भी कार्य करता है अथवा कर सकता है। यह चेतना प्रकृति, समाज, संस्कृति, राष्ट्र के साथ जुड़कर हमारे इन सबों के प्रति जागरूकता एंव दायित्व बोध को जागृत करती है।

रामचरितमानस में प्राकृतिक पर्यावरणीय चेतना पर संक्षिप्त अवलोकन इस प्रकार है।

रामचरितमानस में प्राकृतिक पर्यावरण चेतना:-

प्रकृति और मनुष्य का सम्बंध अटूट है। प्रकृति ही मानव का प्रथम पर्यावरण भी है भारतीय मनीषियों ने समूची प्रकृति और प्राकृतिक शक्तियों को पूजनीय माना है तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में प्रकृति के जीवन्त रूप की अभिव्यंजना अपनी पूर्ण भव्यता के साथ उजागर की है। तुलसी ने प्रकृति के भौतिक व जैविक दोनों घटकों को 'मानस' में समाहित किया है। प्राकृतिक अनुराग एवं प्रकृति सरंक्षण की चिंतन धारा सम्बन्धित अनेक प्रसंग मानस में रचे गए है। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति तुलसी एवं तत्कालीन समाज की चेतना पर संक्षिप्त अवलोकन इस प्रकार है।

(क) प्राकृतिक भौगोलिक सरंचना:- भारत के विशाल आकार ने इसे विशिष्ट भौतिक विविधता प्रदान की है। उत्तर में गगन चुंबी हिमालय तथा गंगा, यमुना, सरयू, गोदावरी जैसी बड़ी नदियां, दक्षिण में प्रायद्विपीय पठारी भाग, पश्चिम में विशाल मरूस्थली, तीन ओर से भारत को घेरे हुए अरब सागर, हिंद महासागर तथा बंगाल की खाड़ी एक वृहद भौगोलिक इकाई है।

जो भारतीय प्रायद्वीप को प्राकृतिक रूप से समृद्ध और विशिष्ट बनाती है। उमाजी हिमालय के घर में जन्म लेने के प्रसंग में तुलसीदास हिमालय के प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ उसके आर्थिक एवं पर्यावरणीय महत्त्व की ओर भी संकेत करते है।

"सदा सुमन फल द्रुम नव नाना जाति।

प्रगटि सुन्दर सैल पर मनि आकर बहु भांति।" [2]

उस सुन्दर पर्वत पर बहुत प्रकार के सब नए-नए वृक्ष सदा पुष्पफल युक्त हो गए और वहां बहुत तरह की मणियों की खानें प्रकट हो गई ।

इस प्रकार तुलसीदास ने 'मानस' में भारत में उपस्थित लगभग सभी पर्वतों का उल्लेख किया है। उदयाचल, अस्ताचल, कैलास, मन्दराचल, सुमेरू, विन्ध्याचल, मैनाक आदि पर्वतों की भौगोलिक स्थिति व सरंचना का विवरण तुलसीदास ने बखूबी दिया है। जिस प्रकार तुलसीदास ने पर्वतों, द्वीपों अन्य क्षेत्रों की स्थिति व सरंचना अभिव्यक्त की है। उससे उनके भौगोलिक ज्ञान को समझा जा सकता है।

(ख) **जल स्त्रोत:-** भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विकास में नदियों का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है इसके अतिरिक्त भारत में नदियों का धार्मिक महत्त्व भी बहुत अधिक है। अधिकांश नगर व मन्दिर इन्ही के तटों पर स्थित हैं। गोस्वामी जी ने मानस में बहुतायत नदियों का उल्लेख भी किया है। तुलसी समस्त मंगलों और आनन्दों का मूल गंगा को मानते है।

"गंगा सकल मुद मंगल मूला" [3]

रामचन्द्र के चित्रकूट प्रसंग में गोस्वामी जी अनेक नदियों का उल्लेख करते हुए उन्हें पुण्यमयी नदियाँ कहते है।

"सुरसरि सुरसइ दिनकर कन्या

मेकल सुता गोदावरि धन्या।"[4]

"सब सर सिंधु नदी नद नाना।

मंदाकिनी कर करंहि बखाना।"[5]

जल स्त्रोतों के परिप्रेक्ष्य में गोस्वामी जी ने तालाबों, कुओं, बावड़ियों आदि की चर्चा की है। राम जब वनगमन के लिए प्रस्थान करते है तब वें जिस-जिस वन में गए वहाँ के तालाब, नदियों के सौन्दर्य के वर्णन को, तुलसी ने अत्यंत हृदयग्राही बना दिया हैं। तुलसीदास 'लवणयुक्त समुद्र की चर्चा करते है।'

'अस कहि लवन सिंधु तक जाई' [6]

'बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा' [7]

गोस्वामी जी ने संकेत किया है कि मानव अपने कार्यों की सहजता एवं सरलता के लिए प्रकृति के मौलिक स्वरूप में परिवर्तन या विकास कर सकता है जिसका उदाहरण सेतूबंध, कुएं, बाबरियाँ आदि हैं। तुलसी ने पृथ्वी और वायुमंडल के मध्य अनवरत चलने वाली नदी चक्र का भी उल्लेख किया है। 'घन घमंड नभ गरजत घोरा' [8]

(आकाश में बादल घुमड़-घुमड़कर घोर गर्जना कर रहे हैं।)

'बरषहि जलद भूमि निअराएं' [9]

(बादल पृथ्वी के समीप आकर बरस रहे हैं।)

'छुद्र नदि भरि चलीं तोराई।' [10]

(छोटी नदियां भरकर किनारों को तुड़ाती हुई चली)

(ग) **जीवों के प्रकार:-** जीव प्रकृति की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण इकाई है। तुलसी ने मानस में प्रकृति में उपस्थित जीवों के प्रकार बताए गए हैं।

'जलचर, थलचर, नभचर नाना।

जे जड़ चेतन जीव जहाना' [11]

'आकर चारि लाख चैरासी ।

जाति जीव जल थल नभ वासी' [12]

प्रकृति में उपस्थित अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों, वृक्षों, वनस्पतियों, वनों का सूक्ष्मतम अंकन गोस्वामी जी ने किया है।

(1) **पशु-पक्षी:-** पशु-पक्षी हमारे पर्यावरण विषेश रूप से परिस्थितिक तन्त्र के अभिन्न अंग है। भारत की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार की है कि यहाँ विश्व की समस्त प्रकार की जलवायु, वनस्पति, जीव-जन्तु आदि विद्यमान है तुलसी जी ने 'मानस' में विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों को चित्रित किया है। चित्रकूट की प्राकृतिक दृश्यावलियाँ अति मनमोहक है

"हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी।

तुम देखी सीता मृगनयनी।

खंजन सुक कपोत मृग मीना।

मधुपनिकर कोकिला प्रवीना" [13]

मानव की प्रसन्नता एवं अवसाद में प्रकृति में उपस्थित जीव से मानव अपने उल्लास, अवसाद, क्रोध, पश्चाताप को सांझा करता है। तुलसी के राम सीता के वियोग में व्याकुल होकर लताओं और पक्षियों से अपना दुख सांझा करते है।

(2) **वृक्ष, वनस्पतियाँ एवं वन:-** तुलसी ने 'रामचरितमानस' में अनेक वनस्पतियों, वृक्षों, वनों का सौन्दर्यात्मक वर्णन किया हैं। इसके साथ उसके सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय महत्त्व का भी रेखांकन किया गया है। भोज्य पदार्थ के रूप में कंद मूल फल का वर्णन मानस में किया गया है एक प्रसंग में वन में रहने वाली कोल, भील प्रजाति श्री राम के आगमन की सूचना मिलने पर वें दोनो ही कंद मूल फल भर भरकर चले मानों दरिद्र सोना लूटने चले हो।

"कंद मूल फल भरि भरि दोना,

चले रंक जनु लूटन सोना।" [14]

तुलसी वनस्पतियों तथा वृक्षों में कपास गूलर, पीपल, बरगद, आम, तुलसी, अमरूद, कमल, चन्दन, केला, सुपारी, अशोक, बेल, बेर, कटहल, अनार, बाँस आदि का नामोल्लेख व अभिव्यक्ति करते है। पंपासरोवर झील के समीप मुनियों के आश्रम में सुन्दर वृक्ष चम्पा, मौलसिरी, कदम्ब, कमाल, पाटल, कटहल, ढाक और आम आदि सुशोभित हैं। वृक्षों तथा फलों, फूलों के आधार पर तुलसी ने नीति वचनों को अर्थवत्ता प्रदान की है। तुलसीदास की प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति दृष्टि और ज्ञान अत्यंत व्यापक है। जिस प्रकार उन्होने प्रकृति को मानस में निरूपित किया है। वह तुलसी की प्रकृति चेतना को ही अभिव्यक्त करता है।

तुलसी की राम कथा और उस राम कथा में पग-पग पर प्रकृति संरक्षण का अवलोकन कर पाठक तुलसी रूपी पारदर्शी झरने को देखकर ठगा सा रह जाता है। मानस की प्राकृतिक पर्यावरण चेतना भावों से ओत प्रोत है-

"तुलसीदास की यह राम कथा उनके भीतर की अपनी कथा है, उनकी स्वानुभूति है और उनके अनुभव में पले राम की कथा है एक बड़ी अध्यात्मिक उँचाई से आई हुई राम कथा की भागीरथी तुलसी के घाट पर आते ही एक ऐसा वृत्ताकार मोड़ लेती है कि वह एक नई काशी बन जाती है।- चित्तकाशी नहीं, भाव काशी।"[15]

तुलसीदास जी प्रकृति से अनन्य भाव से जुड़े है 'रामचरितमानस' में प्रकृति के जीवन्त रूप की अभिव्यंजना पूर्ण भव्यता से हुई है यह अक्षरसः सत्य है।

सन्दर्भ

1. फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी हिन्दी कोश, प्रंसग 214
2. रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा 65
3. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 87, चै. 2
4. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 138, चै. 2
5. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 138, चै. 3
6. रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, दोहा 26, चै. 5
7. रामचरितमानस, लंकाकाण्ड, दोहा 4, चै. 1
8. रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, दोहा 14, चै. 1
9. रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, दोहा 14, चै. 2
10. रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, दोहा 14, चै. 3
11. रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा 3, चै. 2
12. रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा 8, चै. 1
13. रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, दोहा 30, चै. 5
14. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 135, चै. 1
15. रामायण का काव्यमर्म, विद्यानिवास मिश्र, प्र.152

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रन्थ

1. ऋग्वेद, सायण भाष्य सहित,(सं) एफ. मैक्समुलर, वैदिक संशोधन मण्डल, पुना (1533.51)
2. महाभारत, नीलकंठ की टीका सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर
3. श्रीमद्गीता, गीता प्रेस गोरखपुर, सं. 2015
4. श्रीराम चरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास

सहायक ग्रन्थ

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, त्रिवेणी, नागरी प्रचारिणी सभा काशी
2. कामिल बुल्के. रामकथा, प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित छटा संशोधन संस्करण, 1999
3. जयशंकर मिश्र, प्राचीन भारत का समाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना

4. दामोदर शर्मा हरिश्चन्द्र व्यास, आधुनिक जीवन और पर्यावरण, प्रभात प्रकाशन आसफ अली रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003

5. डॉ. रामनाथ शर्मा, भारतीय समाज संस्थाएँ और संस्कृति, एटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

6. डॉ. नगेन्द्र, तुलसी संदर्भ, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम सं. 1998

7. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसीदास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पहला, सं. 1974

8. विद्यानिवास मिश्र, रामायण का काव्यमर्म, प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001

पत्रिका

आयुर्वेद का प्राण, शान्तिकुंज हरिद्वार

Corresponding Author

Suman Lata*

Associate Professor, Hindi Department, D.A.V. College, Pahowa